

मानसून के दौरान मुर्गीपालन प्रबंधन

डॉ. बलराम यादव¹, डॉ. ममता मील² एवं डॉ. अमित³

¹एम.वी.एससी. छात्र, पशु विकृति अध्ययन विभाग, सी.वी.ए.एस., नवानिया, उदयपुर

²एम.वी.एससी. छात्रा, पशु मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, सी.वी.ए.एस., नवानिया, उदयपुर

³एम.वी.एससी. छात्र, पशु पोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., नवानिया, उदयपुर

<https://doi.org/10.5281/zenodo.14001549>

मानसून शब्द का उपयोग आमतौर पर मौसम के अनुसार बदलते वर्षा चरण के पैटर्न को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। मानसून उच्च आर्द्रता और तापमान में उतार-चढ़ाव की चुनौतियों के साथ आता है, जिसमें अधिकांश औसत वार्षिक वर्षा होती है। मानसून विशेष रूप से विभिन्न प्रकार के रोगजनक जीवों (वायरस, जीवाणु, कवक, परजीवी और विभिन्न वैक्टर जैसे मक्खियों, मच्छरों आदि) के प्रसार का पक्षधर है, जो मनुष्य, पशुओं और मुर्गीयों के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होते हैं। इसलिए मानसून के दौरान मुर्गीपालन में कुशल उत्पादन और रहने की क्षमता को बनाए रखने के लिए उचित उपायों की आवश्यकता है। मुर्गीपालन प्रबंधन आमतौर पर पालन प्रथाओं व उत्पादन तकनीकों को संदर्भित करता है, जो उत्पादन की दक्षता को अधिकतम करने में मदद करते हैं। जिसके के लिए सुदृढ़ प्रबंधन प्रथाएँ बहुत आवश्यक हैं, जैसे वैज्ञानिक मुर्गीपालन प्रबंधन जिसका लक्ष्य न्यूनतम निवेश पर अधिकतम रिटर्न प्राप्त करना है।

मानसून के दौरान प्रमुख मुर्गीपालन प्रबंधन -

(क.) आवास प्रबंधन: एक अच्छा आवास मुर्गीपालन में मानसून एवं जलवायु तनाव, और स्वास्थ्य चुनौतियों को कम करता है। आगामी मानसून से पहले मुर्गीपालन घर की छत एवं दीवारों का विधिवत निरीक्षण, किसी भी प्रकार के छेद या रिसाव की उचित मरम्मत, मुर्गीपालन आवास में सीधे बारिश के पानी के प्रवेश को रोकने के लिए साइड ओवरहैंग (कम से कम 3 से 4 फीट के) और आवास के चारों ओर जल निकासी खाई साफ होनी चाहिए। खाली आवास की साइड दीवारों को पूरी तरह से पॉलिथीन के पर्दों से ढक देना चाहिए एवं पर्दे अच्छी स्थिति में होने चाहिए, ताकि आवास में अमोनिया की मात्रा और बारिश की तीव्रता आसानी से नियंत्रित किया जा सके। इसलिए अमोनिया और अन्य अवांछनीय गैसों को बाहर निकालने के लिए दिन के दौरान साइड पर्दों को शीर्ष पर 1-2 फीट खुला रखे दें। अनुचित पर्दे प्रबंधन के परिणामस्वरूप आवास में खराब वेंटिलेशन से अधिक अमोनिया निर्माण के कारण असामान्य श्वसन ध्वनि, अनुचित पाचन और जलोदर संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। आवास के बाहर कम से कम 10 फीट की दूरी, ठीक से साफ की जाना चाहिए जो झाड़ियों व घास से मुक्त हो। यदि मानसून में आवास के आसपास जलजमाव होता है तो, कीड़ों का प्रजनन आवास में भारी समस्या उत्पन्न कर सकता है, जैसे- मक्खियाँ मुर्गीयों में कई वायरल, बैक्टीरियल और परजीवी संक्रमणों में वाहक के रूप में कार्य करती हैं।

इसके अलावा गुदा के आसपास ढीली चिपचिपी मल का जमाव, कीड़ों से घाव विकसित होने की संभावना पैदा करता है। आवास के बाहर कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग और नियमित ब्लीचिंग पाउडर एवं फॉर्मैलिन (3-5%) के छिड़काव से कीड़ों की आबादी पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

(ख.) लिटर / बिस्तर प्रबंधन: लिटर की पर्याप्त देखभाल जरूरी है, क्योंकि मुर्गियां अपना पूरा जीवन गहरे बिस्तर (डीप लिटर) में बिताती हैं, जिसके लिए चावल की भूसी, चूरा और लकड़ी की कतरन आमतौर पर लिटर सामग्री के रूप में उपयोग ली जाती हैं। एक अच्छी गुणवत्ता वाला लिटर अत्यधिक अवशोषक एवं मल और पेशाब की सांद्रता को कम करने वाला होना चाहिए। फर्श पर लिटर की मोटाई लगभग 3 इंच हो एवं लिटर को गीला करने वाला कोई रिसाव नहीं होना चाहिए, क्योंकि गीला और जमा हुआ लिटर मुर्गीपालन आवास में यूरिक एसिड के रासायनिक और माइक्रोबियल क्षरण से अमोनिया की अधिक मात्रा उत्पन्न करता है। लिटर में अमोनिया का अधिकतम अनुमेय स्तर 25 पीपीएम है, हालांकि केवल 6 पीपीएम सांद्रता पर, आंखों और श्वसन पथ में जलन होने लगती है जिससे मुर्गियों में संक्रमण हो सकता है। गीला और जमा हुआ लिटर वायरस, फफूंद एवं बैक्टीरिया की वृद्धि, पैरो पर घाव एवं फफोले और कोक्सीडियल ऊसिस्ट का अंकुरण करता है, जो विभिन्न बीमारियों और खराब प्रदर्शन का कारण बनते हैं। सामान्यतः लिटर में आदर्श नमी की मात्रा 20-25% होनी चाहिए एवं आवश्यकता पड़ने पर गीले लिटर की सामग्री को बदलने के लिए कम से कम 20% अधिक लिटर सामग्री, सूखी जगह पर संग्रहित रखनी चाहिए। यदि लिटर बहुत सूखा है, तो हवा काफी धूल भरी हो जाती है, जो श्वसन पथ में जलन पैदा करती है और फिर रोगाणु आसानी से आक्रमण कर देते हैं, यह प्रक्रिया, श्वसन रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता काफी कम कर जाती है। मानसून में जमे लिटर से छुटकारा पाने के लिए नियमित रूप से दिन में 2 बार लिटर की जांच करें, खासकर जहां पीने के बर्तन रखे गए हों। यदि लिटर की नमी 40% से अधिक है, तो उसे तुरंत हटाकर और उसके स्थान पर ताजा लिटर डाला जाना चाहिए। लिटर की नमी को कम करने के लिए प्रति 100 फीट² फर्श क्षेत्र में 1 किलो बुझा हुआ चूना और 150 ग्राम ब्लीचिंग पाउडर मिलाएं। गहरे लिटर वाले ब्रॉयलर फार्मों में प्रति 300 मुर्गियों पर सीलिंग फैन होना चाहिए। फफूंद वृद्धि को रोकने के लिए, नए लिटर को $CuSO_4$ के 2% जलीय घोल से उपचारित किया जा सकता है। फार्म स्तर पर लिटर की नमी का आकलन लिटर का नमूना हाथ पर लेकर उंगलियों की सहायता से हथेली में दबा कर देखा जा सकता है। यदि लिटर की नमी अनुकूलतम है, तो लिटर में दरारें दिखाई देती हैं और वह धीरे-धीरे अलग होता है। लेकिन यदि लिटर बहुत गीला है, तो यह एक एकजुट गेंद या गांठ बन जाएगा और बहुत सूखा है, तो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, वह आसानी से उखड़ जाएगा और अलग हो जाएगा।

(ग.) आहार / दाना प्रबंधन: मानसून के दौरान उच्च तापमान और आर्द्रता के कारण, मुर्गियां भोजन का सेवन कम कर देती हैं। इसलिए आहार सेवन पर मौसमी प्रभाव को ध्यान में रखते हुए आहार तैयार करें और सभी महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का ध्यान रखें। आहार को अधिक समय तक संग्रहित न रखें, क्योंकि मानसून में उच्च आर्द्रता आहार की शेल्फ-लाइफ कम करती है। थैलियों में रखे आहार को कभी भी गर्म न होने दें या केक न बनने दें, क्योंकि आहार विघटन फफूंद वृद्धि के प्रारंभिक संकेत हैं। यदि आहार दूर स्थान से आ रहा है, तो सुनिश्चित करें कि परिवहन वाहन पूरी तरह से बंद है और वाहन के अंदर पानी का रिसाव नहीं हो रहा है। बरसात के दिनों में बार-बार परिवहन से बचने के लिए 4 से 5 दिन का अतिरिक्त आहार भंडार रखना चाहिए। डनेज सिस्टम आहार के थैलो को स्टोर करने का सबसे अच्छा तरीका पर है। नमी के संपर्क से बचने के लिए आहार के थैलो को फर्श से कम से कम 1 फीट ऊपर और साइड की दीवारों से दूर लकड़ी/बांस के फूस पर रखा जाना चाहिए, जिससे थैलो के नीचे मुक्त हवा की आवाजाही सुविधा भी हो। इससे विषाक्तता संबंधी समस्या कम होगी एवं आहार वितरण में एफ.आई.एफ.ओ. प्रणाली का उपयोग करें। दिन में कम से कम एक बार फीडर (आहार कुंड) को सूखे कपड़े से पोंछना चाहिए एवं लकड़ी के फीडर का उपयोग करने से बचें क्योंकि इससे कवक विषाक्तता होती है, इसकी जगह



प्लास्टिक फीडर का उपयोग करना कहीं बेहतर है जो आसानी से साफ और कीटाणुनाशक उद्देश्य को पूरा करते हैं।

(घ.) जल प्रबंधन: मुर्गीपालन आवास में पानी की गुणवत्ता पर अक्सर बाद में विचार किया जाता है, लेकिन स्वच्छ एवं सुरक्षित जल आपूर्ति का मुर्गीपालन प्रदर्शन पर भारी प्रभाव पड़ सकता है। बरसात के मौसम में पानी की गुणवत्ता, विशेषकर सतही ई. कोली और अन्य कोलीफॉर्म की अधिक मात्रा से आसानी से प्रभावित हो जाती है और ये दूषित जल आसानी से मुर्गियों में प्रकोप का कारण बन जाता है। इसलिए, जल प्रक्षालक का उचित खुराक के साथ उपयोग कर नियमित जल स्वच्छता बनाए रखना आवश्यक है। मुर्गियों को 6 से 6.8 पीएच वाला पानी पसंद है, लेकिन अधिकांश रोगजनकों की वृद्धि को रोकने के लिए पानी का पीएच 5.0 से 5.5 के आसपास रखा जा सकता है, जो तनाव को कम करने में भी मदद करता है। जल-जनित रोगों की घटनाओं को कम करने के लिए पीने के बर्तनों को प्रतिदिन (डिटर्जेंट और ब्लीचिंग पाउडर से) एवं पाइपलाइनों को सप्ताह में कम से कम एक बार साफ करना चाहिए।

(ङ.) स्वच्छता प्रबंधन: फीडर, वॉटरर्स और होवर जैसे सभी चल उपकरणों को, साफ और कीटाणुरहित किया जाना चाहिए। सभी कूड़े-कचरे को खुरच कर हटाना एवं घर के अंदरूनी और बाहरी हिस्से को अनुशंसित सांद्रता वाले किसी व्यावसायिक कीटाणुनाशक घोल से कीटाणुरहित किया जाना चाहिए। प्रत्येक सफाई के बाद नया लिटर फैलाना चाहिए जिसमें आवश्यकता अनुसार कीटनाशक की अनुशंसित मात्रा भी मिली जा सकती है। कीड़ों के खतरे से बचने के लिए कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए, जैसे मैलाथियान छिड़काव का उपयोग किलनी और घुन को नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है।

(च.) रोग प्रबंधन: मानसून के दौरान खराब मौसम और बढ़ी हुई आर्द्रता मुर्गियों में संक्रमण कर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करते हैं जो बड़े पैमाने पर कई प्रकोपों में योगदान करती हैं। इस समय स्थानीय फसल वृद्धि के परिणामस्वरूप भी कीड़ों की आबादी और कृतक जानवरो की गतिविधियाँ भी बढ़ जाती हैं जो मुर्गियों में उच्च रुग्णता और मृत्यु दर कर, मुर्गीपालक किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती पैदा करते हैं।

मानसून के दौरान मुर्गीपालन में आने वाली बीमारियाँ -

1. माइकोटॉक्सिकोसिस- यह बीमारी माइकोटॉक्सिन के सेवन या संपर्क से उत्पन्न होती है, जो अनाज और चारे में पाए जाने वाले कुछ फिलामेंटस कवक (एस्पेरगिलस, पेनिसिलियम और फ्यूसेरियम जेनेरा की प्रजातियों) के द्वितीयक मेटाबोलाइट्स हैं। माइकोटॉक्सिन विशेष रूप से मुर्गियों में गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा करते हैं और सभी मुर्गी प्रजातियों को प्रभावित करते हैं, जिससे मुख्य रूप से वजन में कमी, खराब आहार दक्षता, अंडे के उत्पादन और वजन में कमी, यकृत और गुर्दे की क्षति आदि के साथ-साथ गंभीर प्रतिरक्षादमनकारी बीमारियाँ होती हैं। आहार सामग्री की उचित निगरानी, अत्यधिक दूषित कच्चे माल और इसके उपयोग को सीमित करना, आहार में व्यापक विष बाँधने वाली दवा का उपयोग करना आदि से माइकोटॉक्सिन के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

2. गम्बोरो रोग (आई.बी.डी.)- युवा मुर्गियों का अत्यधिक संक्रामक वायरल रोग है, जिसमें अवसाद, पानी जैसा दस्त, झालरदार पंख और निर्जलीकरण शामिल हैं। वायरस अपरिपक्व बी-लिम्फोसाइटों को संक्रमित कर प्रतिरक्षा दमन का करता है, जिससे स्वस्थ मुर्गियों में द्वितीयक संक्रमण होता है। यह संक्रमण एक से दूसरे पक्षी में मल-मूत्र के माध्यम से फैलता है, जबकी संक्रमित कपड़े और उपकरण फार्मों के बीच संचरण के साधन हैं। मानसून में, माइकोटॉक्सिकोसिस के कारण यह बीमारी और भी जटिल हो सकती है और आई.बी.डी. का कोई भी इलाज नहीं है, इसलिए नियंत्रण का सबसे अच्छा साधन प्रजनकों और युवा चूजों का टीकाकरण है।

3. इंकलूजन बॉडी हेपेटाइटिस (आई.बी.एच.) और हाइड्रो-पेरीकार्डियम सिंड्रोम (एच.पी.एस.)- ये चिकन एडिनो वायरस से होने वाली अत्यधिक संक्रामक बीमारियाँ हैं, जो मुख्य रूप से युवा ब्रॉयलर में



होती हैं, जिनमें अंतर्गर्भाशयी इंकलूज़न बॉडी, हाइड्रोपेरीकार्डियम, यकृत एवं गुर्दे में रक्तस्राव और परिगलित परिवर्तन, उच्च आहार रूपांतरण अनुपात के साथ अचानक मृत्यु होती हैं। संक्रामक बर्सल रोग (आई.बी.डी.) और चिकन संक्रामक एनीमिया जैसी प्रतिरक्षादमनकारी बीमारियाँ, एडिनो वायरस को आई.बी.एच. और एच.पी.एस. उत्पन्न करने में मदद करती हैं। नियंत्रण के लिए जीवित और निष्क्रिय दोनों टीके उपलब्ध हैं, लेकिन क्षैतिज संचरण को प्रतिबंधित करने के लिए फार्म स्तर पर सख्त जैव-सुरक्षा उपायों को लागू किया जाना चाहिए।

4. एस्परजीलोसिस- इसे ब्रूडर निमोनिया के नाम से जाना जाता है, जो एस्परजीलस फ्यूमिगेटस कवक के कारण युवा मुर्गियों के ऊपरी श्वसन पथ का संक्रमण है। संचरण दूषित कूड़े (नम चूरा, लकड़ी की छीलन) या दूषित आहार से कवक बीजाणुओं को साँस में लेने से होता है। लक्षणों में श्वसन संकट (दमा, हांफना), सुस्ती, क्षीणता आदि शामिल हैं। संक्रमित मुर्गियों के लिए कोई विशिष्ट उपचार नहीं है, लेकिन सख्त हैचरी स्वच्छता, उचित वेंटिलेशन, 2% CuSO₄ स्प्रे के साथ कूड़े का प्रबंधन और सख्त जैव-सुरक्षा उपायों से संक्रमण की संभावना को कम किया जा सकता है।

5. कोलीबैसिलोसिस- यह मुर्गियों में एक सदाबहार बीमारी है जो एवियन एस्चेरिचिया कोली रोगजनक के संक्रमण के कारण होती है। इसे दुनिया भर में मुर्गियों में आर्थिक रूप से सबसे विनाशकारी जीवाणु रोगों में से एक माना जाता है। मानसून में, ई. कोलाई मुख्य रूप से पानी एवं मल संदूषण से मुर्गियों में फैलता है। आई.बी.डी. और एफ्लाटॉक्सिकोसिस से प्रतिरक्षादमन भी मुर्गियों को संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। उपचार के लिए एंटीबायोटिक संवेदनशीलता परीक्षण पर आधारित एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन कोलीबैसिलोसिस की रोकथाम अच्छे स्वच्छता प्रबंधन, अंडे सेने के प्रबंधन और पेयजल प्रबंधन प्रथाओं पर निर्भर करती है।

6. कोक्सीडायोसिस- मुर्गीपालन में दुनिया भर में आर्थिक नुकसान का सबसे बड़ा कारण है, जो ईमेरिया प्रोटोजोअन परजीवी जाति के कारण होता है। इसकी मुर्गीपालन में प्रीपेटेंट रोग अवधि 4-7 दिन है और मेजबान कोशिकाओं में परजीवी प्रतिकृति व आंतों की म्यूकोसा को व्यापक क्षति इसकी विशेषता है। गीला कूड़ा, ऑक्सीजन और गर्म तापमान कोक्सीडियन उसिस्ट के स्पोरुलेशन के लिए आदर्श वातावरण हैं, जिससे कोक्सीडियोसिस प्रकोप होता है। इस रोग की लक्षण विशेषता आम तौर पर दोषपूर्ण पाचन और अवशोषण, दस्त, रक्त हानि, निर्जलीकरण व अन्य बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि है, लेकिन मुख्य वित्तीय हानि रोग के उपनैदानिक रूप के कारण होती है। उपचार महंगा है, इसलिए नियंत्रण ही उपाय है। बीमारी और अक्सर सूक्ष्म संक्रमण से जुड़े आर्थिक नुकसान को रोकने के लिए आहार में एंटीकोसिडियल यौगिकों का उपयोग किया जा सकता है।

भारत में मुर्गीपालन किसानों के लिए मानसून अभूतपूर्व चुनौतियाँ पैदा करता है, जिसके लिए प्रभावी रणनीतियों के कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। प्रभावी फार्म प्रबंधन तकनीकों, जैव-सुरक्षा उपायों और विवेकपूर्ण पोषण संबंधी दृष्टिकोण को अपनाकर मुर्गीपालक मानसून के दौरान मुर्गीपालन की असंख्य चुनौतियों पर काबू पा सकते हैं और फार्म में उत्पादकता स्तर बनाए रख सकते हैं।

